यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

डॉ. सुनीता शर्मा

सहायकाचार्य

राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

23–24, विद्यानगर, से. 4, हिरण मगरी, उदयपुर

(शतपथ ब्राह्मण 14–3–2–9)

वेद अखिल धर्म का मूल कहा गया है – वेदोऽखिलो धर्म मूलम्। भगवान मनु के इस सूत्र को स्मरण रखते हुए जब तैतरीय ब्राह्मण का प्रसिद्ध वचन 'अनंता वै वेदाः (तै.ब्रा. 3/10/11) वैदिक साहित्य के किसी विद्वान को सुनाया जाता है तो कुछ समय के लिए उसको हठात् गंभीर विचार करना पड़ता है। साधारणतया ऐहिक जीवन संबंधी जितने कर्त्तव्य कर्म है, वे सब परिमित हैं। हम इन्हें मर्यादित या सान्त (अंत वाले) कह सकते हैं। उनकी गणना कर सकते है। पर अपने प्रत्यक्ष जीवन में कोई भी ऐसी वस्तु अथवा घटना हमारे साक्षात् अनुभव में नहीं आती कि जिसके आधार पर हमकों किसी अनन्त तत्व का ज्ञान हो सके। तीन आयु पर्यन्त ब्रह्मचर्य धारण कर सतत्, वेदाध्ययन करने वाले महर्षि भारद्वाज से भी जब इन्द्र को यह कहना पड़ा कि तीन बड़े पर्वतों से तीन मुट्ठी मिट्टी की जो तुलना हो सकती है, उतना ही वेद का ज्ञान तुमको तीन जन्मों में हुआ हे और शेष अनिरूक्त ही है। तो प्रायः सर्व आवश्यक साधन विहीन वर्तमान के वेद पाठियों को अनन्त वेद अथवा वेद प्रतिपादित सूक्ष्म रहस्यों का संपूर्ण ज्ञान हो सकता है या नहीं इसका अनुभव सहज ही में किया जा सकता है। हाँ व्यवहारिक भाषा में किन्हीं परिणामों के द्वारा वेद अथवा धर्म आदि अनन्त तत्वों की निरूक्ति की जा सकती है।

वेदों में अनेक ऐसे अनन्त मूल्यवान तत्त्वों का बीज रूप में संकेत मिलता है, जिनका विस्तृत वर्णन अन्यान्य वेदानुकूल आर्षग्रंथों में प्राप्त होता है। इस समय वैदिक साहित्य का अधिक भाग अनुपलब्ध है। 1131 शाखाओं में से केवल 12 शाखायें ही प्राप्त होती हैं और उनमें से भी 5½ के भाष्य मिलते है। यही दशा अन्य ग्रंथों की भी है। आवयश्क सामग्री के अभाव में जिन वैदिक तत्वों का वर्णन किया जाएगा वह अधूरा ही होगा इसमें संदेह नहीं है।

यज्ञ को याजुषी श्रुति के प्रथम मंत्र में "श्रेष्ठतमाय कर्म" कहा है ओर शतपथ ब्राह्मण में इसका अर्थ यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म किया गया है।

अग्निमीले पुरोहितम यज्ञस्य देवमृत्विजम होतारं रत्नधातमम।

(ऋग्वेद 1/7/1–5)

ऋग्वेद के प्रथम मंत्र का प्रारंभ ही यज्ञ शब्द से किया गया है। अन्य वेदों और वेद शाखाओं में भी स्थान–स्थान पर यज्ञों का वर्णन किया गया है। अतः अनंत ज्ञान के भंडार, अनन्त विधाओं के आगार में यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ विद्या कहा गया है।

हमारी संस्कृति यज्ञ प्रधान रही है। यज्ञ शब्द यज् 'यज्' धातु में 'नङ्' प्रत्यय जोड़कर बनाया गया हे, जिसका अर्थ है जोड़ना। अपने आप को किसी सद्कार्य में संलग्न करना। इसी से यज्ञ का अर्थ हुआ देवपूजा, संगतिकरण और दान। बड़ों के प्रति सम्मान, बराबरी वालों के प्रति स्नेह संबंध और छोटों के प्रति अपने कर्त्तव्य का बोध। इस में समस्त जड़ और चेतन के प्रति कल्याण की, शिव की, शंभु की, मयस्करण की भावना निहित है। सबका कल्याण हो, सबका मंगल हो, यही हमारी वैदिक संस्कृति का मूल है।

यज्ञ तीन प्रकार के कहे गये है। कर्म यज्ञ, ज्ञान यज्ञ और उपासना यज्ञ। इन सबका एक दूसरे की पूर्ति से संबंध है। वैसे तो समस्त सृष्टि ही यज्ञमयी है, पर यहाँ उस यज्ञ पर ही विचार कर रही हूँ, जिसकी आज सर्वत्र आवश्यकता अनुभव की जा रही है। वह यज्ञ है भैषज्य यज्ञ। इसका संबंध आयुर्वेद से है। इस यज्ञ के लिए देश काल और पदार्थों का ज्ञान आवश्यक कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है –

"भैषज्य यज्ञा वा एते। ऋतु सन्धिषु व्याधिर्जायते तस्मात् ऋतु सन्धिषु प्रयुज्यन्ते।"

अर्थात् ऋतुओं की सन्धियों में व्याधियाँ होती है, इसलिये इस यज्ञ का प्रयोग ऋतु संधियों में होता है। छान्दोग्य उपनिषद् में कहा गया है कि ऐसे यज्ञ का ब्रह्मा वैद्यकशास्त्रज्ञ को बनाना चाहिए। अतः इस यज्ञ के लिए वनस्पतियों के गुण और समय का ज्ञान होना आवश्यक है। जो प्राणी जिस देश का वासी है, उसके लिए उसी देश की औषधियाँ, वनस्पतियाँ, जड़ी–बुटियाँ हितकर होती है। ऋतुओं का प्रभाव भी देश भेद से अलग–अलग होता है, अतः देश और ऋतु संधिकाल का ज्ञान आवश्यक है। शारीरिक ज्ञान और निदान को मिला देने से यही विज्ञान आयुर्वेद बन जाता है। ऐसी बातें व्यक्ति–व्यक्ति से संबंध रखती है।

सड़क की सफाई, शौचालयों की सफाई, पानी की शुद्धि, रोशनी, अस्पताल के सार्वजनिक कार्यो की तरह ही यज्ञकर्म भी सार्वजनिक महत्त्व का कार्य है। आर्य समाज अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार इन कार्यों को सम्पन्न करता है। पर हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इस कार्य में योग दे। प्रत्येक घर में यज्ञ प्रतिदिन होना चाहिए। महाभारत से पूर्व घर–घर में यज्ञ होते थे, पर उनमें विकृतियाँ आ गई। लोगों ने घी दीप जला कर ही इस यज्ञ की आशिंक पूर्ति की। यज्ञों में विकृतियों के कारण ही कालान्तर में इनका विरोध किया गया और यह शुभ कार्य सदा के लिये बंद सा हो गया। अब प्रत्येक घर में यज्ञ प्रतिदिन होना चाहिए। होली जैसे पर्व में ऋतु संधि के यज्ञ हर गली और चौराहों पर सम्पन्न होते रहे है, पर पता नहीं किस युग से उनमें आसुरी वृत्ति ने प्रवेश कर लिया कि उसमें विकृतियाँ आ गई। यज्ञ के लिये समिधा और अन्य सामग्री की ओर से ध्यान हट गया। सड़ी गली लकड़ियाँ, कंडे डाल कर यह यज्ञ सम्पन्न होने लगा। जंगल से लायी जाने वाली जड़ी बूटियाँ और अन्य औषधिगुण सम्पन्न काष्ठादिकों का अज्ञान उसका सबसे बड़ा कारण रहा

है। प्रदूषण आज का सबसे बड़ा संकट है। वायु में प्रदूषण, पानी में प्रदूषण, खाने–पीने की वस्तुओं में प्रदूषण सर्वत्र प्रदूषण व्याप्त है।

आज यज्ञों का प्रचार बंद होने से ही वायु विकार, असाधारण ऋतु अकाल अतिवृष्टि, बाढ़ों का प्रभाव हो रहा है। जनधन की प्रभूत हानि हो रही है। विदेशों से आयातित रसायन घातक सिद्ध हो रहे है। हर देश में हो रहे आणविक परीक्षण, फेक्ट्रियाँ, मिलों, कारों, आदि में पेट्रोल, डीजल, गैसे, वानस्पतिक तेल और ऐसे ही अन्य स्कूटर, बसों, ट्रकों, ट्रेक्टर, वायुयान सभी वायु प्रदूषण को बढ़ावा दे रहे है।

पुराकाल में भी कभी ऐसी समस्या विश्व के सामने आई होगी जब शिव को विषपान करना पड़ा – लोक कल्याण के लिये शिव और कोई नहीं – यह हमारा अनन्त क्षेत्र में व्याप्त अन्तरिक्ष है, जो समस्त ब्राह्मण्ड के विष का पान करता रहता है, पर अब तो उसके कंठ में इतना विष भर गया है कि उसका कंठ ही फटा जा रहा है। छिद्र हो गया है अंतरिक्ष में और उपाय ढूँढ रहे है संसार भर के वैज्ञानिक। यह वैदिक संस्कृति के सपूतों के वश की बात है कि वे इस विकार का उपाय कर सकें।

शुद्ध वायु जीवन दायिनी होती है। प्रदूषण रोगों को जन्म देता हैं यक्ष्मा, कैंसर, एड्स जैसे भयंकर रोग इसी की प्रमुख देन है। प्रदूषण मृत्यु का कारण बनता है, सामूहिक मृत्यु का, प्रलय का। वेद प्रदूषण रोकने का सरलतम मार्ग बताता है –

"वात आ वातु भेषजं शम्भू मयोभु नो हृदे।

प्राण आयूंषि तारिषत्।।" (ऋ. 10/187/1)

अर्थात् औषधि सम्पृक्त वायु जीवनदायिनी होती है, स्वास्थ्यवर्धक होती है। ऐसी वायु यज्ञ की दूत व पुरोहित होती है। चारों और से औषधियों से युक्त वायु बह–बहकर हमारे स्वास्थ्य में वृद्धि करें। हृदयों को गति दे, ताजगी दे, जीवन दे। प्रत्येक कारखाने प्रत्येक विष उगलने वाली फैक्ट्री के लिये आवश्यक है कि वह भेषज वायु का उत्पादन करे। प्राचीन काल में वायु शुद्धि आवश्यक मानी गई थी। यज्ञ प्रक्रिया इसी के लिए अपनायी गयी थी। वायु शुद्धि के लिये प्रातःकाल सूर्योदय से एक घड़ी पूर्व और सूर्योदय के बाद की एक घड़ी यज्ञ के लिए उपयुक्त कही गयी है। यज्ञ में प्रमुख रूप से गाय के घी का प्रमुख स्थान है। उसमें विष नाशक गुण है। यदि कोई व्यक्ति विष भक्षण कर ले, या किसी व्यक्ति को साँप डस ले तो रोगी को घी पिलाने का विधान है। अतः यज्ञ में भी विषनाशक घी की आहुतियाँ देने का विधान है। घी को संस्कृत में सर्पि कहा गया है। उसका कारण यही है साँप को सर्प कहा गया है इसलिये कि वह भी वायु से विष खींच लेता हे। महादेव के कंठ में सर्प लिपटे देखते है महादेव के साथ–साथ ये भी विषपान करते रहते है।

यज्ञ में डाला जाने वाला घी 'आज्य' कहा जाता है। आज्य का अर्थ है – "आ समन्तात् जयन्ति असुरान् अनेन" इससे पृथ्वी पर रोगाणुओं पर विजय की प्राप्ति की जाती है। आज्य का एक अर्थ गति या क्षेपण भी है। घी जब अग्नि में डाला जाता है तो वह एक विशेष गति उत्पन्न करता है। विशेष शक्ति प्राप्त कर लेता है। समस्त औषधियों के परमाणुओं को अंतरिक्ष में पहुँचाता है। घृत का एक छद्म नाम है। अमृत

की नाभि (यजुर्वेद) घी अग्नि में डालने से अमृत की वर्षा करता है। यज्ञ में मधु और मीठे पदार्थ भी डाले जाते हैं – ये रक्त शुद्धि में सहायक है। इनमें सोमलता (गिलोय) ब्राह्मी, नेगड़, बावची, बच, कूठ, शतावरी आदि औषधियाँ भी डाली जाती है, जो अपना–अपना प्रभाव डालती है। अतः यज्ञ में डाली जाने वाली औषधियों का यज्ञ कर्त्ता को ज्ञान होना चाहिए। आयुर्वेद को ब्रह्मापद देने का यही तात्पर्य है। यजुर्वेद में अम्बा, अम्बालिका और अंबिका तीन पुष्टिवर्धक औषधियों का वर्णन है जिनसे आरोग्यता प्राप्त करने का विधान है।

शतं यो अम्बधामानि, सहस्रमुत यो रूह।

अधाशत क्रत्वो यूयमिमं मे अंगदं कृत।।

अर्थात् सैंकड़ों स्थानों और सैकड़ों प्रकार से उगने वाली अंकुरित होने वाली है अंबा तुम आओ और हम सबको आरोग्य प्रदान करो।

प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा।

अम्बे, अंबिके, अंबालिके नमानयति कश्चन्।।

हे अम्बे, हे अंबालिके, हे अंबिके, तुम्हारा प्राण, अपान और व्यान के लिए हवन करते हैं। यजुर्वेद में 23/18 में बताया गया है कि ये काम्पील नाम की औषधि के साथ होती है। कांपीला को गुडारोचन, ग्रंध द्रव्य भी कहते है।

ऊँ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

(यजुर्वेद – रूद्र अध्याय)

सुगन्धि और पुष्टि को बढ़ाने वाली तीनों अंबिकाओं का हम हवन करते है, जिससे हम मृत्यु के दुःख से उसी प्रकार छूट जावें, जिस प्रकार खरबूजा या फूट काकड़ी अनायास अपने बंधन से मुक्त हो जाती है। सहस्वस्राऽग्निचकया जुषश्च। (यर्जु. 3/57) में अंबिका को बहनों के साथ हवन करने को कहा है। डॉक्टर वैद्य आज भी बिमारियों से छुटकारा पाने के लिए शक्कर, नीम के पत्ते आदि जलाने की आज्ञा देते है। यह गंध चिकित्सा के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रही है।

यज्ञ को होम (हवन) कहते है। चीनी भाषा में इसे घोम, पारसियों के धर्म ग्रंथ जेन्दावस्था (छंदावस्था या अथर्ववेद) में होम का उल्लेख है। हिन्दू ही नहीं, मुस्लिम, पारसी, यहुदी, ईसाई सभी धर्मों, संस्कृतियों में हवन का महत्त्व स्वीकार किया गया है। उक्त सभी धर्म स्थानों में तथा हिन्दू धर्म के पूजा स्थान माता जी, भैरूजी आदि के चबूतरों, मंदिरों में मुसलमानों की दरगाहों, मजारों तक में यज्ञ के विकृत रूप में लोबान या गूगल जैसी औषधियों डालकर, जलाकर भूत चिकित्सा की जाती है यह गंध चिकित्सा ही है। अथर्ववेद में हवन से निरोगता विषयक पर्याप्त चर्चा की गई हैं। राजयक्ष्या से मुक्ति के लिये –

मुंचामित्वा हविषा जीवनाय कमज्ञात

यक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्। ग्राहि जग्राह

यथेतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्रमुक्तमेनम्।।

अथर्व – 3/11/1

जिसकी आयु समाप्त हो गई है या होने वाली हो, जो लगभग मृत्यु को प्राप्त हो चुका हो, या मृत्यु के निकट आ गया है, तो भी यज्ञ उसे रोग रहित करके शक्ति देता हुआ सौ वर्ष की आयु प्रदान करता है। यथा –

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृयोरंतिकं नीता एवं।

तमां हराभिनिर्ऋते रूपस्थादस्पार्षमेनं शतशारदाय।।

(अथर्व – 3/11/2)

और भी कहा गया है –

सहस्राक्षेण शतवीर्येण शतायुषां हविषाहार्षमेनम्।

शतं यथेनं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम्।।

ऋग्वेद – 10/16/3

हजारों बीजों से युक्त, सैकड़ों प्रकार की शक्ति और गुणों से युक्त सौ वर्ष की आयु देने वाले हवन के द्वारा इसको लाया हूँ। आत्मा को जिस प्रकार सौ वर्ष की आयु तक ले जाएगा और सारे संसार के दोषों को, बुराइयों को, रोगों को पार पहुँचाएगा वैसा मैं करता हूँ। और कहा है –

शतं जीव शरदो वर्धमानः

शतं हेमन्ताच्छतमुवसन्तान्।

शतं इन्द्रो अग्नि सविता वृहस्पति

शतं युषा हविषा हार्षमेनम्।

या

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुयज्ञेन कल्पतां।

श्रोतं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन

कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पताम (यजुः 18/29)

अर्थात् हवन सौ वर्ष की आयु देता है। सौ वसंत, सौ हेमन्त सौ शीतकाल की आयु देता है। शारीरिक और मानसिक चिकित्सा देता है। यज्ञ वर्षा का जनक है। यज्ञ औषधि मिश्रित शुद्ध आप का भी दान करता है और देता है शुद्ध खाद्यान्न।

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।

आदित्याज्जायेत वृष्टि वृष्टिरेरन्नं ततः प्रजा।।

मनुस्मृति 3/76

अन्नाद् भविन्त भूतानि पर्जन्यादन्न संभवः।

यज्ञाद भवति पर्जन्यो–यज्ञाद्कर्म समुद्भवः।।

श्रीमद्भगवद्गीता 3/14

यज्ञ मित्र और वरूण (हाइड्रोजन और ऑक्सीजन) के परमाणुओं का विखंडन कर मिलता है और पानी बरसाता है।

मित्रावरूणयोर्रेतश्च स्कन्दः।

(तैत्तिरीय 3/2/1/4)

अतः यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।।

यज्ञो अपि तस्यै जनतापै कल्पते,

तत्रैव विद्वान होता भवति।।

(ऐतरेय ब्राह्मण 1/2/1)

आज वर्तमान युग में यज्ञ की आवश्यकता इसलिए भी अधिक है क्योंकि आज तरह–तरह के वायरस द्वारा अनेक रोगों का प्रकोप बढ़ रहा है। ऐसें में यज्ञ ही एक मात्र उपाय है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार दुनियाभर में होने वाली 57 मिलियन मौत में से अकेली 15 मिलियन (25 प्रतिशत) से ज्यादा मौत इन्हीं इंफेक्शन फैलाने वाले विषाणुओं से होती है। हवन करने से विषाणुओं से सम्बन्धित ही नहीं बल्कि अन्य और भी बहुत सी बिमारियां खत्म होती है। आज का बढ़ता तापमान, औद्योगिकरण, वृक्षों की कटाई, पॉलिथिन का उपयोग, जल, वायु, मृदा, प्रदूषण, चरमावस्था में है, जिसके कारण प्राणियों की रक्षा के लिए संचरित हमारे रक्षा कवच, ओजोन परत में छेद होने लगा है। ऐसा लगता है संपूर्ण जैवमण्डल विनिष्ट हो रहा है।

ओमपूर्णमदः पूर्णमिदं को आधुनिक स्वार्थी, योगलिप्सा में लिप्त मानव अनसुना करके अपने आप को मारने पर तुला है। ऐसे में इस समस्या के समाधान हेतु प्रयासों के साथ क्या हम एक छोटा सा प्रयास यज्ञ के रूप में नहीं कर सकते?